315hi01

1

भारत के इतिहास को समझना

बीती हुई घटनाओं के अध्ययन को इतिहास कहते हैं। इससे हमें उन प्रक्रियाओं को समझने में मदद मिलती है जिन्होंने मानव को अपने वातावरण पर विजय प्राप्त करने की तथा आज की सभ्यता का विकास करने की क्षमता दी। कुछ लोग समझते हैं कि इतिहास में केवल युद्धों और राजाओं के ब्यौरे ही होते हैं। ऐसा नहीं है। इसमें उपलब्ध स्रोतों के आधार पर एक लंबी अवधि के समाज, अर्थव्यवस्था और सांस्क तिक प्रव त्तियो का विश्लेषण किया जाता है। इतिहासकार इस समय के दौरान आई विभिन्न स्थितियों का मूल्यांकन करता है और प्रश्न उठाता है कि कुछ घटनाएँ क्यों घटीं और यह भी देखता है कि समस्त समाज पर उनका प्रभाव क्या रहा? जब भी कोई नया प्रमाण सामने आता है या पहले से मौजूद प्रमाणों की विद्वानों द्वारा नई व्याख्या की जाती है तो इससे अतीत के बारे में हमारी जानकारी और सम द्ध होती है। इतिहासकार तथ्य और कल्पना के बीच अंतर करता है लेकिन किसी समाज में मौखिक परंपरा पर आधारित मिथकों में बीती घटनाओं की स्म तियाँ भी छिपी हो सकती हैं। इतिहासकार का काम है, विभिन्न ऐतिहासिक प्रमाणों की सत्यता की जाँच के द्वारा तथ्य की पहचान करना। इस पाठ में आप सीखेंगे कि किस तरह अनेक प्रकार के ऐतिहासिक साक्ष्यों और उनकी व्याख्या के माध्यम से भारत के प्राचीन इतिहास का ब्यौरा तैयार किया गया।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आपः

- ऽ भारत के प्राचीन इतिहास की ऐतिहासिक संरचना समझा सकेगें;
- प्राचीन इतिहासकारों द्वारा प्रयोग में लाई गई विभिन्न प्रकार की स्रोत सामग्री के बारे में बता सकेंगे और
- इतिहास लेखन की बदलती परंपराओं को पहचान सकेंगे।

1.1 प्राचीन भारतीय इतिहास के पुनर्निमाण के स्रोत

प्राचीन भारतीय इतिहास की पुनः संरचना के लिए प्रयुक्त स्रोत सामग्री की आवश्यकता होती है। लेकिन स्वयं स्रोत अतीत को हमारे सामने नहीं लाते। उन्हें व्याख्या की ज़रूरत

होती है और इतिहासकार उन स्रोतों को वाणी देते हैं। वास्तव में इतिहासकार से अपेक्षा की जाती है कि सार्थक रूप से समझाने के लिए वह स्रोत को ढूँढे, पाठों को पढ़े, सुरागों का पीछा करें, उपयुक्त प्रश्न उठाए और प्रमाणों की सत्यता की जाँच करे। उदाहरण के लिए सन 1826 में चार्ल्स मेसन ने पश्चिमी पंजाब के हड़प्पा गाँव में (जो अब पाकिस्तान में है) किसी पुरानी बस्ती की ऊँची–ऊँची दीवारें और मीनारें देखीं और इसके पाँच दशक बाद सर अलेक्जेंडर कनिंघम ने उसी स्थान से कुछ सील मुहरें एकत्रित कीं। लेकिन इसके भी पचास वर्ष बाद जाकर पुरातत्त्ववेत्ता जॉन मार्शल ने वहाँ सिंध क्षेत्र की प्राचीनतम सभ्यता की पहचान की। इतिहासकार तरह–तरह के साक्ष्यों की पुष्टि कैसे करते हैं, उसका एक और उदाहरण हम दे रहे हैं। राजा हर्षवर्धन (ईसा की सातवीं शताब्दी) से जुड़े किसी भी स्रोत में हमें चालुक्य पुलकेशिन द्वितीय के हाथों उनकी पराजय का उल्लेख नहीं मिलता है, लेकिन राजा पुलकेशिन द्वितीय के एक शिलालेख में उनके द्वारा हराने का दावा किया गया है। इस स्थिति में यह स्पष्ट हो जाता है कि हर्ष की जीवनी,हर्षचरित्र के लेखक बाणभट्ट ने जानबूझकर अपने आश्रयदाता की पराजय का उल्लेख नहीं किया है।

इतिहासश्का शाब्दिक अर्थ है, 'ऐसा हुआ'। अंग्रेजी में इसका अनुवाद History (हिस्ट्री) किया जाता है। एक समय था जब लिखित अभिलेखों को ही इतिहास का प्रामाणिक स्रोत माना जाता था। लिखित सामग्री की सत्यता जाँची जा सकती है, उसे उद्ध त किया जा सकता है और अन्य स्रोतों से उसकी पुष्टि भी की जा सकती है। मिथक, लोकगीत आदि मौखिक साक्ष्यों को सही स्रोत माना ही नहीं जाता था। प्रारंभिक इतिहासकार मिथकों, कथाओं और मौखिक परंपराओं का सहारा नाममात्र को ही लेते थे क्योंकि न तो उनके सही होने का कोई प्रमाण होता था, और न उनकी सच्चाई की जाँच हो सकती थी। लेकिन आज अनेक नए तरीकों से गैर पारंपरिक स्रोतों का उपयोग हो रहा है। परंपराओं और सांस्क तिक प्रव त्तियों का अध्ययन अन्य ऐतिहासिक तथ्यों की रोशनी में होना चाहिए।

उदाहरण के लिए, महाभारत दो भाइयों की संतानों के बीच हुए संघर्ष की गाथा है। हम निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि इस महाकाव्य में वर्णित युद्ध सचमुच हुआ था या नहीं। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि यह युद्ध वास्तव में हुआ था, जबकि कुछ अन्य इतिहासकार दूसरे स्रोतों से पुष्टि हुए बिना इस बात को मानने को तैयार नहीं हैं। मूल कथा शायद सूतों द्वारा रची गई हो जो आम तौर पर क्षत्रिय योद्धाओं के साथ युद्ध क्षेत्र में जाते थे और उनकी विजयों तथा अन्य उपलब्धियों की प्रशंसा में काव्य रच–रचकर सुनाते थे। ये रचनाएँ मौखिक रूप में ही प्रसारित होती थीं और मानव स्म ति का एक हिस्सा बनकर सुरक्षित बची रहीं।

साहित्यिक स्रोत

1.2 धार्मिक साहित्य

भारत की अधिकतम प्राचीन रचनाएँ धर्म से संबद्ध रही हैं। इन्हें वेद कहा जाता है। इनका रचनाकाल 1500 ई.पू. से 500 ई.पू.श्के लगभग माना जाता है। वेदों की संख्या चार है। ऋग्वेद में मुख्य रूप से प्रार्थनाएँ ही हैं। अन्य तीन वेदों– साम, यजुर और अथर्व में प्रार्थनाएँ, अनुष्ठान, मंत्र और पुराण कथाएँ हैं। उपनिषदों में आत्मा और परमात्मा संबंधी दार्शनिक विवेचन है। इन्हें वेदांत भी कहा जाता है।

रामायणश और महाभारत, इन दो महाकाव्यों का संकलन अनुमानतः ईस्वी सन 400 तक जाकर पूरा हुआ होगा। इनमें से 'महाभारत' के रचनाकार व्यास मुनि माने जाते हैं। इसमें मूलतः 8800श्लोक थे और इसका नाम 'जय–गीत' अर्थात विजय गान था। आगे चलकर इसका विस्तार 24,000श्लोकों में हो गया और इसे 'भारत' कहा जाने लगा क्योंकि इसमें प्राचीनतम वैदिक वंशो में से एक – भरतवंश के उत्तराधिकारियों की गाथाएँ हैं। इसके एक और विस्त त संस्करण 'महाभारत' में 1,00,000 श्लोक हैं। इसी प्रकार मूलतः वाल्मीकि द्वारा रचित 'रामायण' में 6000 श्लोक थे, मगर आगे चलकर इसका विस्तार 12000 और फिर 24000 श्लोकों में हो गया।

उत्तर–वैदिक (वेदों के बाद वाले) काल (600 ई.पू. के बाद) में हमें अनुष्ठान संबंधी ढेर सारा धार्मिक साहित्य मिलता है जिसे सूत्र कहते हैं। राजाओं द्वारा बड़े–बड़े बलि यज्ञ आदि के विधान 'श्रौतसूत्र' में मिलते हैं जबकि जन्म, नामकरण, यज्ञोपवीत, विवाह, अंत्येष्टि आदि संस्कारों से जुड़े घरेलू अनुष्ठानों का विधान 'ग ह्यसूत्र' में मिलता है। इस साहित्य का संकलन लगभग 600 से 300 ई.पू. के बीच हुआ।

जैनों और बौद्धों के धार्मिक ग्रंथ इन धर्मों से जुड़े ऐतिहासिक व्यक्तित्वों और घटनाओं का विवरण देते हैं। आंरभिक बौद्ध रचनाएँ पालि में लिखी गई थीं। इन्हें 'त्रिपिटक' (तीन पिटारे) कहा जाता है –'सुत्तपिटक' 'विनयपिटक' और 'अभिधम्म पिटक'। धर्म से इतर बौद्ध साहित्य में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान 'जातकों' का है। इनमें गौतम बुद्ध के पूर्व जन्मों की कहानियाँ हैं। माना जाता है कि गौतम के रूप मे जन्म लेने के पहले बुद्ध के 550 जन्म और हुए थे। हर जन्म की कहानी एक जातक कहलाती है। ये कहानियाँ ईसा पूर्व पाँचवीं से दूसरी शताब्दी के बीच के काल की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों पर बहुत महत्त्वपूर्ण प्रकाश डालती हैं। जैन पाठों की रचना प्राक त भाषा में हुई और आगे चलकर इनका संकलन ईसा की छठी शताब्दी में गुजरात के वल्लभी नामक स्थान पर हुआ। इन्हें 'अंग' कहा जाता है और इनमें जैनों की दार्शनिक अवधारणाएँ मिलती हैं।

1.3 धार्मिकेतर साहित्य

इस कोटि के साहित्य का विषय धर्म नहीं होता। इस वर्ग में धर्मशास्त्र या वे संहिताएँ आती हैं जो विभिन्न सामाजिक समुदायों के कर्त्तव्यों का विधान करती हैं। वे चोरी, हत्या, व्यभिचार आदि के अपराधियों के लिए दंड निर्धारित करती हैं। इनमें सबसे पहला ग्रंथ है 'मनु स्म ति'। यह वह पहला ग्रंथ था जिसका अनुवाद करके अंग्रेजों ने उसे भारतीय विधि संहिता (कोड) का आधार बनाया। कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में मौर्य काल की भारतीय अर्थव्यवस्था और राजनीति के अध्ययन के लिए बड़ी महत्त्वपूर्ण सामग्री मिलती है। इतिहास की पुनः संरचना के लिए कभी–कभी व्याकरण ग्रंथ भी बड़े काम के साबित होते हैं। व्याकरण पर सबसे पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ पाणिनि रचित 'अष्टाध्यायी' है जिसका रचना काल विद्वानों ने 700 ई.पू. के लगभग माना है।

कालिदास गुप्तकाल में हुए और उन्होने कविताओं और नाटकों की रचना की। इनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध है 'अभिज्ञानश्शाकुन्तलम्', 'ऋतुसंहार' और 'मेघदूतम्'। महान रचनाएँ होने के साथ ही ये हमें गुप्तकाल के सामाजिक और सांस्क तिक जीवन की झलकियाँ भी दिखलाती हैं। कश्मीर का इतिहास जानने के लिए हमारे पास 'राज तरंगिणी' नामक एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ हैं जिसकी रचना कल्हण (12वीं सदी ईस्वी) ने की

थी। इतिहास लेखन में सहायता के लिए धर्मेतर ग्रंथों में जीवनियाँ या चरित बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। इनकी रचना दरबारी कवि अपने आश्रयदाता शासकों के गुणगान के लिए करते थे। वे चूँकि अपने आश्रयदाताओं की उपलब्धियों का बहुत अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया करते थे, इसलिए उनका अध्ययन ज़रा सावधानी से करना चाहिए। इस तरह की एक महत्त्वपूर्ण क ति है 'हर्षचरित्र' जिसकी रचना बाणभट्टने हर्षवर्धन की प्रशंसा में की थी।

दक्षिण भारत का सबसे प्रारंभिक साहित्य संगम साहित्य कहलाता है। इसकी रचना तमिल में हुई थी और यह धर्मेतर साहित्य की श्रेणी में आता है। इसके रचयिता वे कवि थे जो ईसा की पहली चार शताब्दियों के दौरान राजाओं और सामंतों के द्वारा प्रायोजित सम्मेलनों (संगम) में एकत्रित होते थे। इस साहित्य में विभिन्न नायकों की प्रशस्ति में रचित छोटी और लंबी कविताएँ मिलती हैं।शायद इन्हें राजदरबारों में सुनाने के लिए रचा जाता था। इस साहित्य के अंतर्गत 'शिल्पदिकारम्' और 'मणिमेकली' जैसे महाकाव्य भी आते हैं। 300 ई.पू. से लेकर ईस्वी सन् 300 की अवधि में दक्षिण भारतीय समाज, अर्थव्यवस्था और राजनीति के अध्ययन के लिए संगम साहित्य ही हमारा प्रमुख स्रोत है। इस साहित्य में मिले वर्णनों की पुष्टि पुरातात्त्विक खोजों से और विदेशी यात्रियों के व त्तांतों से होती है।

पाठगत प्रश्न 1.1

1. चारों वेदों के नाम बताइए।
2. संस्क त व्याकरण का सर्वप्रथम ग्रंथ कौन सा है?
3. जातक से क्या तात्पर्य है?
4. दक्षिण भारत के संगम साहित्य की भाषा क्या है?
5. 'उपनिषद्' से आप क्या समझते हैं?

1.4 गैर साहित्यिक स्रोत

अभिलेख

पत्थर, धातु, पकी हुई मिट्टी आदि जैसी सख़्त सतह पर खुरचकर उकेरी हुई लिखावट को अभिलेख कहते हैं। इनका अध्ययन पुरालेख विद्या के अंतर्गत होता है। ऐसे बिलकुल प्रांरभिक लेख शिलाओं या पत्थरों पर खुदे हुए मिलते हैं। आम तौर पर इनमें इन्हें खुदवाने वालों की उपलब्धियों, क्रिया–कलापों और विचारों का विवरण मिलता है। इसलिए हमें ऐसे शिलालेख मिलते हैं जिनमें राजाओं की यशोगाथा होती है या लोगों द्वारा धार्मिक

उद्देश्य से किए गए दान–पुण्य का उल्लेख होता है। कवियों ने राजाओं तथा आश्रयदाताओं की प्रशंसा में ऐसे जिन अभिलेखों की रचना की थी, उन्हे प्रशस्तियाँ कहते हैं। कुछ उत्कीर्ण लेखों में तारीखें दी हुई हैं। अन्य के समय का अनुमान पुरालिपिशास्त्र या लेखनशैली के आधार पर काफ़ी सटीकता से लगाया जाता है। बिल्कुल प्रारंभिक शिलालेख प्राक त में मिलते हैं जो आम लोगों की भाषा थी। आगे चलकर इनमें तमिल और संस्क त का प्रयोग भी होने लगा।

शिलालेख लिखवाने वालों में सबसे पहला नाम मौर्य सम्राट अशोक का है। उनके अधिकतर शिलालेख ब्राह्मी लिपि में लिखी प्राक त भाषा में हैं, हालाँकि उत्तर–पश्चिम में मिले कुछ शिलालेखों की लिपि खरोष्ठी है। अफ़गानिस्तान में मिले शिलालेख अरामाइक और ग्रीक लिपि में हैं ताकि स्थानीय लोग उनमें लिखी हुई बातें समझ सकें। ब्राह्मी लिपि को पढ़ने में सबसे पहले जेम्स प्रिंसेप को 1837 मे सफलता मिली। प्रिंसेप ब्रिटिश शासन मे सिविल सर्वेंट थे। ब्राह्मी हिंदी (देवनागरी) की ही भाँति बाएँ से दाएँ लिखी जाती थी जबकि खरोष्ठी दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी। अशोक के शिलालेखों से हमें उनकी धर्म तथा प्रशासन संबंधी नीतियों को समझने में बहुत सहायता मिलती है। ईसा पूर्व पहली सदी से राजा धर्मार्थ भूमि का दान करने लगे थे। सबसे पहले दक्कन के सातवाहन राजाओं ने ऐसा दान शुरू किया। उत्कीर्ण लेखों में ऐसे दाताओं और दान प्राप्त करने वालों का विवरण खुदा हुआ मिलता है। ऐसे लेखों से हमें उस युग की धार्मिक तथा आर्थिक गतिविधियों के बारे में जानकारी मिलती है। इनमें से कुछ लेख पत्थरों पर पाए गए हैं पर अधिकतर लेख ताँबे के पत्तरों पर मिलते है। ताँबे के पत्तरों पर खुदे अभिलेख शायद भूमि पानेवालों के हित में भूमि के स्वामित्व के प्रमाण के रूप मे तैयार किए जाते थे।

मगर इस प्रकार के लेखों को प्रमाण के तौर पर पूरी तरह स्वीकारने में कुछ बाधाएँ है। उदाहरण के लिए, कहीं अक्षर काफ़ी हल्के खुदे हैं, इसलिए उन्हें पूरी तरह पढ़ना–समझना संभव नहीं होता। इसके अलावा कहीं–कहीं लिखावट घिस गई है और कुछ अक्षर गायब हो गए हैं। यह भी हो सकता है कि कुछशब्दों के अर्थ हमारे सामने स्पष्ट न हो सकें क्योंकि वे किसी विशेष स्थान या समय से जुड़े हों।

पाठगत प्रश्न 1.2

1. उत्कीर्ण लेखों का अध्ययन क्या कहलाता है?

2. प्रशस्ति किसे कहते हैं?

3. पुरालिपिशास्त्र (Palaeology) की परिभाषा दीजिए?

4. अशोक के अधिकतर शिलालेख किस लिपि में लिखे गए हैं?

1.5 सिक्के

सिक्कों का अध्ययन मुद्रा शास्त्र कहलाता है। इसके अंतर्गत सिक्कों पर उकेरी हुई लिपि और आक तियों जैसे द श्य तत्व ही नहीं धातुओं के विश्लेषण जैसे तत्त्व भी आ जाते हैं। प्राचीन सिक्के अधिकतर ताँबा, चाँदी, सोना तथा सीसा जैसी धातुओं में ढाले जाते थे। भारत में सबसे पहले पाए जानेवाले सिक्कों में कुछ प्रतीक बने होते थे और इन्हें आहत (पंच मार्क्ड) सिक्के कहा जाता था। ये (ई.पू. छठी शताब्दी के बाद से) चाँदी और ताँबे मे ढले होते थे। पहले–पहल जिन सिक्कों में शासकों के नाम और आक तियाँ दिखाई देती हैं उन्हें भारतीय–यूनानियों ने जारी किया था जिनका (ई.पू. दूसरी शताब्दी के लगभग) इस उपमहाद्वीप के उत्तर–पश्चिमी भाग पर नियंत्रण स्थापित हो चुका था। सर्वप्रथम स्वर्ण मुद्राएँ ईसा की पहली सदी के लगभग कुषाणों ने जारी की थीं। कुछ बहुत ही दर्शनीय स्वर्ण मुद्राएँ गुप्त वंश के शासकों ने जारी की थीं। इनमें प्रारंभिक मुद्राएँ इनके सोने की शुद्धता के लिए जानी जाती हैं।

सिक्के चूँकि विनिमय (लेन–देन) के माध्यम के रूप मे काम में लिए जाते थे इसलिए उनसे आर्थिक इतिहास के बारे में उपयोगी जानकारी मिलती है। कुछ सिक्के शासकों की अनुमति से व्यापारियों और दस्तकारों के संघों द्वारा भी जारी किए जाते थे। इससे दस्तकारी और वाणिज्य के प्रभाव का पता चलता हैं। सिक्कों पर राजाओं और देवताओं की आक तियाँ भी दिखाई देती है और धार्मिक प्रतीक भी। इन सबसे उस समय की कला और धर्म पर प्रकाश पड़ता है।

पाठगत प्रश्न 1.3

1. सिक्कों के अध्ययन को क्या कहा जाता है?

   ____

2. आहत (पंच मार्क्ड) सिक्कों में किन धातुओं का प्रयोग होता था?

   ____

3. भारत में पहले–पहल किस राजवंश ने सोने के सिक्कों को जारी किया था?

   ____

1.6 पुरातत्व

अतीत के भौतिक अवशेषों का अध्ययन पुरातत्त्व की सहायता से होता है जो हमें पुराने टीलों की तहों की एक के बाद एक व्यवस्थित रूप से खुदाई करना और इसके द्वारा मिले अवशेषों के आधार पर बीते युग के मनुष्यों के भौतिक जीवन के बारे में अनुमान लगाना सिखाता है। इतिहास–पूर्व काल, अर्थात् लेखन का आविष्कार होने के पहले के युग के अध्ययन के लिए पुरातत्त्व बहुत महत्त्वपूर्ण है। इतिहास मूलतः लिखित सामग्री पर आधारित होता है। हालाँकि भारत में 2500 ई.पू. में भी सिंधु घाटी संस्क ति के काल में लेखन का प्रचलन हो चुका था, पर उस लिपि को अब तक पढ़ा नहीं जा सका है। इस प्रकार हालाँकि हड़प्पावासी लिखना जानते थे, पर इतिहासकार उस लेखन को पढ़ नहीं

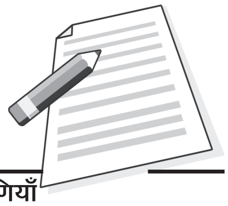

पाए हैं। उनकी संस्क ति को प्रारंभिक ऐतिहासिक दौर में रखा गया है। जिस सबसे पहली लिपि को पढ़ा जा चुका है, वह है ब्राह्मी, जो ई.पू. तीसरी सदी की लिपि है और अशोक के शिलालेखों में प्रयुक्त हुई है।

खुदाई के द्वारा भारत में सात लाख वर्ष पहले रहने वाले मानवों के द्वारा प्रयुक्त औज़ार तक मिले हैं। हड़प्पा के स्थानों की खुदाई से वहाँ की बस्तियों की योजना तथा लोगों के निवास स्थानों के स्वरूप का पता चलता है। साथ ही यह भी पता चलता है कि वे मिट्टी के किस प्रकार के बर्तनों, कैसे औज़ारों और उपकरणों और किस प्रकार के खाद्यानों का इस्तेमाल करते थे। दक्षिण भारत में कुछ व्यक्तियों को उनके मिटट्ी के बर्तनों, औज़ारों, हथियारों, और अन्य निजी वस्तुओं के साथ बड़े–बड़े भारी पत्थरों के नीचे दफ़नाया जाता था। इन कब्रों को महापाषाण (मेगालिथ) कहा जाता है। इनकी खुदाई से हमें तीसरी सदी ई.पू. के पहले दक्षिण भारत में रहने वाले लोगों के जीवन के बारे में पता चलता है।

खुदाई में मिले अवशेषों की प्राचीनता या उम्र का निर्धारण कई पद्धतियों से होता है। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण है रेडियो कार्बन या कार्बन–14 (सी–14) काल –निर्धारण पद्धति। कार्बन–14 एक विकिरणशील कार्बन है जो सभी प्रकार के जीवनधारियों में होता है। जीवनधारियों की म त्यु के बाद सभी विकिरणशील पदार्थों की तरह यह भी एक निश्चित समान गति से नष्ट होता है। किसी भी प्राचीन पदार्थ (लकड़ी या हड्डी) की उम्र का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि उसके सी–14 तत्त्वों का किस सीमा तक ह्रास हुआ है।

मौसम और वनस्पतियों के इतिहास का पता पौधों के अवशिष्ट अंशों और मुख्यतः पराग के विश्लेषण से लगता है। इस आधार पर यह अनुमान लगाया गया है कि कश्मीर और राजस्थान में 7000–6000 ई.पू. के लगभग भी खेती होती थी। धातु की बनी वस्तुओं की प्रक ति तथा उनके अवयवों का भी वैज्ञानिक विश्लेषण हो सकता है और इससे उन खदानों का भी पता चल सकता है जिनसे ये धातुएँ निकाली गई थीं। इस प्रकार धातु प्रौद्योगिकी (टेक्नॉलॉजी) के विकास के चरणों को भी पहचाना जा सकता है। भूवैज्ञानिक अध्ययन से प्रागैतिहासिक मानव के निवास स्थल की मिटट्ी, चट्टानों आदि के इतिहास का अनुमान हो जाता है। जब तक एक ओर मनुष्य और दूसरी ओर मिट्टी, पौधों और पशुओं के निरंतर पारस्परिक संपर्क को न समझा जाए तब तक मानव इतिहास को भी नहीं समझा जा सकता। पुरातात्त्विक अवशेषों के साथ ही भूवैज्ञानिक और प्राणिशास्त्रीय अध्ययनों का योग मानव इतिहास की पुनः रचना और विकास के लिए महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करता है।

पाठगत प्रश्न 1.4

1. पुरातत्त्वशशास्त्र की परिभाषा दीजिए।

___

2. सी–14 काल–निर्धारण की उपयोगिता समझाइए।

___

1.7 विदेशी यात्रियों के व त्तांत

स्थानीय साहित्य से प्राप्त जानकारी को विदेशियों द्वारा दिए गए ब्यौरों से और बढ़ाया जा सकता है। भारत में समय–समय पर ग्रीस, रोम और चीन से आगंतुक आते रहे – कोई राजदूत बनकर, कोई यात्री के रूप में तो कोई धर्म के अध्ययन के लिए। उन्होंने जो कुछ देखा, वे उसका व त्तांत छोड़ गए हैं। चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में मेगास्थनीज़ नामक ग्रीक राजदूत आया था जिसने 'इंडिका' नामक ग्रंथ लिखा। इसका मूल पाठ आज नहीं मिलता लेकिन इसके कुछ अंश परवर्ती ग्रीक लेखकों की रचनाओं में उद्धरणों के रूप में सुरक्षित रह गए हैं। इन्हें एकत्रित करके पढ़ा जाए तो हमें मौर्य काल की प्रशासन व्यवस्था ही नहीं, बल्कि सामाजिक वर्गों तथा आर्थिक गतिविधियों की भी बहुमूल्य जानकारी मिलती है।

पहली और दूसरी शताब्दी ईस्वी के ग्रीक और रोमन व त्तांतों में कई भारतीय बंदरगाहों का और उन वस्तुओं का उल्लेख हुआ है जिनका व्यापार भारत तथा रोमन साम्राज्य के बीच होता था। इस संदर्भ में ग्रीक में लिखे ग्रंथ 'एरिथ्रियन सी' और टॉलेमी के 'ज्यॉग्रफी' बहुमूल्य सामग्री उपलब्ध कराते हैं।

चीनी यात्रियों में फ़ाहियान और ह्वेनत्सांग का नाम लिया जा सकता है। दोनों बौद्ध थे और इस देश में बौद्ध तीर्थों के दर्शन तथा बौद्ध धर्म का अध्ययन करने आए थे। ईसा की पाँचवी शताब्दी में भारत में आए फ़ाहियान ने गुप्तकालीन भारत की स्थितियों का वर्णन किया है जबकि ह्वेनत्सांग ने सातवीं सदी में राजा हर्षवर्धन के काल का वैसा ही ब्यौरा दिया है। ह्वेनत्सांग ने उस समय नालंदा विश्वविद्यालय (बिहार) के उत्कर्ष का भी बड़े विस्तार से वर्णन किया है।

पाठगत प्रश्न 1.5

1. 'इंडिका' किसने लिखी?

   ____

2. भारत आने वाले चीनी यात्रियों के नाम बताइए।

   ____

3. नालंदा विश्वविद्यालय के उत्कर्ष का उल्लेख किस चीनी यात्री ने किया?

   ____

1.8 इतिहास की बदलती अवधारणाएँ

एक धारणा विशेषकर पश्चिमी विद्वानों द्वारा फैलाई गई कि प्राचीन काल के भारतीयों में इतिहास लेखन का कोई बोध नहीं था। मगर यह सही नहीं है। वास्तव में भारतीयों का इतिहास लेखन बोध पश्चिमी लोगों से भिन्न था। पश्चिम में घटनाओं को कालक्रम के अनुसार लिखा जाता था जबकि प्राचीन भारत की पद्धति इससे भिन्न थी। इसका उदाहरण हम पुराणों में देख सकते हैं जिनमें चार विभिन्न युगों – सतयुग, त्रेता, द्वापर

और कलियुग का उल्लेख है और हर युग के शासकों और राजवंशों की विस्त त सूची भी हमें मिलती है। इसके अतिरिक्त उत्कीर्ण लेखों की भी बड़ी संख्या मिली है जिनमें विभिन्न राजवंशों के राजाओं की वंशावलियों का और साथ ही उनकी उपलब्धियों का उल्लेख है। इससे पता चलता है कि भारतीयों को घटनाओं के समय (काल) और स्थान का बुनियादी बोध था।

प्राचीन भारत के इतिहास में आधुनिक खोज 1765 में आरंभ हुई जब बंगाल और बिहार ईस्ट इंडिया कंपनी के नियंत्रण में आ गए। हिंदू विधि व्यवस्था लागू करने के लिए भारतीय विधि के प्राचीन ग्रंथ 'मनुस्म ति' का 1776 में अंग्रेजी में अनुवाद किया गया। अंग्रेजों ने प्राचीन (भारतीय) नियमों और आचारों को जानने–समझने के जो आरंभिक प्रयत्न किए थे, उन्हें सन् 1784 में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना के साथ पूर्णता प्राप्त हुई तथा ऐसी अन्य कई सोसाइटियों के तत्त्वावधान में हिंदू धार्मिक तथा शास्त्रीय लेखन का अंग्रेजी में अनुवाद हुआ। इस के अध्ययन को सबसे अधिक बल जर्मनी में जन्मे विद्वान मैक्समूलर के प्रयत्नों से मिला। अंग्रेजों ने भी जल्द ही समझ लिया कि भारतीयों पर अच्छी तरह से शासन करने के लिए उनके धर्मग्रंथों और समाज–व्यवस्थाओं का ज्ञान आवश्यक है। ईसाई मिशनरियों ने भी भारतीयों का धर्मांतरण करने और ब्रिटिश शासन को सुद ढ़ करने के लिए भारतीय कानूनों और रीति–रिवाजों की अधिक जानकारी हासिल करने की ज़रूरत को महसूस किया था। भारतीय लेखन का अनुवाद करते हुए पश्चिमी विद्वानों ने जताया कि भारतीय परिवर्तन के प्रति अनिच्छुक होते हैं और अत्याचारी शासन के अभ्यस्त हो चुके हैं।

सन 1904 में विन्सेंट ए. स्मिथ ने 'अर्ली हिस्ट्री ऑफ इंडिया' लिखी। यह प्राचीन भारत का पहला व्यवस्थित इतिहास था। लेखक ने इसमें इतिहास को ब्रिटिश द ष्टिकोण से देखा है और भारत में ब्रिटिश शासन को आवश्यक ठहराने की चेष्टा की है। अंग्रेजों के तानाशाही शासन को बनाए रखने के लिए इसने अच्छी प्रचार साम्रगी का काम किया।

भारतीय विद्वान, विशेषकर वे जो पश्चिमी शिक्षा प्राप्त कर चुके थे, इस बात से बड़े परेशान थे कि अंग्रेज़ लोग भारतीय इतिहास को अपने नज़रिये से अपने हित के अनुसार तोड़–मरोड़कर पेश कर रहे थे। राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर उनमें से कुछ ने इतिहास को फिर से लिखने का दायित्व उठाया ताकि भारतीय संस्कति के वास्तविक गौरव को दुनिया के सामने लाया जा सके । इस प्रकार के दो महत्वपूर्ण राष्ट्रीय इतिहासकार थे, आर. जी. भंडारकर (1837 - 1925) और वी. के. राजवाडे (1869 - 1926) जिन्होंने अनेक स्रोतों से सामग्री एकत्रित करके सामाजिक और राजनीतिक इतिहास की पुनः रचना की। ऐसा करते हुए उन्होंने बाल–विवाह और जाति–प्रथा जैसी कुछ सामाजिक बुराइयों पर प्रहार भी किए और विधवाओं के पुनर्विवाह की हिमायत भी की। पी. वी. काणे (1880-1972) का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होने 'हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्र',शीर्षक एक विराट ग्रंथ की रचना की जिसमें प्राचीन भारतीय समाज के प्रमुख तत्वों पर प्रकाश डाला गया था।

इन भारतीय विद्वानों ने राजनीति संबंधी प्राचीन भारतीय ग्रंथों का गहराई से अध्ययन किया ताकि प्राचीन भारतीयों की प्रशासन संबंधी बुद्धि को प्रमाणित किया जा सके। डी. आर. भंडारकर (1875 -1950) पुरालेख विद्या के विद्वान थे। वे प्राचीन भारतीय सामाजिक संस्थाओं पर लिखे हुए ग्रंथ प्रकाशित किया करते थे। एच.सी. रायचौधुरी

(1892 - 1957) ने प्राचीन भारत के इतिहास का पुनः लेखन किया और इस क्रम में कई बिंदुओं पर वी. ए. स्मिथ की आलोचना की। आर. सी. मजूमदार (1888-1980) के लेखन में यह बात और भी मज़बूती से उभरती है। उन्होंने कई खंडों में 'हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ इंडियन पीपुल' का संपादन किया। 1960 तक राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित भारतीय विद्वान अपने–अपने क्षेत्रों के और भारत के इतिहास के गौरव को बढ़ा–चढ़ाकर दिखाते रहे। अंग्रेजों ने प्राचीन भारतीय शासकों के अत्याचारी और निरंकुश होने का जो मिथक गढ़ा था, उसे तोड़ने का श्रेय के.पी. जायसवाल (1881 -1937) को जाता है। उन्होंने प्राचीन भारत में गणतंत्र और स्वशासन के अस्तित्व के बारे में लिखा ।

स्वतंत्रता के बाद इतिहास लेखन में एक नई प्रव त्ति छाने लगी। अब राजनीतिक इतिहास से हटकर समाज और अर्थव्यवस्था के इतिहास पर अधिक बल दिया जाने लगा। इस प्रकार की पहली रचनाओं में से एक थी ए.एल. बाशम (1914-1986) लिखित 'द वॉण्डर दैट वॉज़ इंडिया'। डी.डी. कोसांबी (1907-1966) के ग्रंथ 'एन इंट्रोडक्शन टु द स्टडी ऑफ इंडियन हिस्ट्री' में यह परिवर्तन और भी स्पष्ट हुआ है। उनका लेखन प्राचीन भारतीय इतिहास के सामाजिक–आर्थिक पक्ष को लेकर चला है। उनके पश्चात बहुत सारे इतिहासकारों ने इस प्रव त्ति का अनुसरण किया और अपने लेखन को सामाजिक, आर्थिक और सांस्क तिक इतिहास पर केंद्रित किया। उनका प्रमुख बल उत्पादन के साधनों और विभिन्न समूहों के व्यक्तियों के बीच के सामाजिक तथा आर्थिक संबंधों पर रहा।

पाठगत प्रश्न 1.6

1. स्वतंत्रता के बाद इतिहास लेखन में उभरी प्रव त्ति पर प्रकाश डालें ?

___

1.9 भारतीय इतिहास की विषयवस्तु

अतीत के संपूर्ण ज्ञान के लिए विद्यार्थियों को समाज के विभिन्न पक्षों के प्रति जागरूक करना आवश्यक है। इन पक्षों को 'विषयवस्तु' कहा जाता है। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक, सांस्क तिक आदि विभिन्न क्षेत्रों में जो कुछ भी घटनाएँ हुईं उनके बारे में हमें जानकारी मिलती है। इन तमाम क्षेत्रों में हुई घटनाएँ परस्पर इतनी अधिक सम्बंधित होती हैं कि इनके बीच की सीमाएँ अक्सर टूट जाती हैं। उदाहरण के लिए, जब प्रारंभिक वैदिक युग का गोपालक समाज उत्तर वैदिक काल में बस्तियों में बसे क षक समाज में बदला तो परिणामस्वरूप राजनीतिक पद्धति में भी परिवर्तन आया। गोपालक समाज में राजा गोपति कहलाता था। क षि आधारित अर्थव्यवस्था के विकास के साथ वह भूपति कहलाने लगा। साथ ही अब युद्ध दूसरों की गायें छीनने के लिए नहीं बल्कि अधिक भूमि हासिल करने के लिए होने लगे। राजा क्रमशः अधिक शक्तिशाली होने लगे और राजा का पद वंश–परंपरा से मिलने लगा। तो हम देखते है कि विभिन्न क्षेत्रों के परिवर्तन एक–दूसरे से जुड़ जाते हैं। प्रायः उनका प्रभाव बड़ी–बड़ी घटनाओं पर पड़ता है। इस पाठ्य सामग्री में आपको कला, स्थापत्य, जाति व्यवस्था, विज्ञान और अर्थव्यवस्था,

प्रौद्योगिकी आदि के क्षेत्रों में हुए विकास की ही नहीं, विभिन्न धार्मिक पंथों और आचार–अनुष्ठानों की भी जानकारी मिलेगी।

पाठांत प्रश्न

1. प्राचीन भारत के धार्मिकेतर साहित्य पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ?
2. इतिहास की पुनः रचना के स्रोत के रूप मे सिक्कों के विषय पर पाँच वाक्य लिखिए ?
3. अतीत को समझने में पुरातत्त्व हमारी किस प्रकार सहायता करता है ?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1

1. ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद
2. अष्टाध्यायी
3. जातक गौतम बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाओं का संग्रह है।
4. तमिल
5. उपनिषद् वेदों का अंतिम भाग है। उनमें आत्मा और परमात्मा के दर्शन की चर्चा की गई है।

1.2

1. पुरालेख विद्या
2. कवियों द्वारा राजाओं तथा अन्य आश्रयदाताओं की प्रशंसा में रचे गए अभिलेख
3. ब्राह्मी

1.3

1. मुद्राशास्त्र
2. चाँदी और ताँबा
3. कुषाण

1.4

1. अतीत को समझने के लिए उत्खनन (खुदाई) का विज्ञान
2. यह पुरातात्विक खुदाई में निकली हड्डियों और लकड़ी के काल (समय) का पता लगाने में सहायक होता है।

1.5

1. मेगास्थनीज
2. फ़ाहियान, ह्वेनत्सांग
3. ह्वेनत्सांग

1.6

1. अनुभाग 1.9 के छठे अनुच्छेद को देखें

पाठांत प्रश्नों के लिए संकेत

1. देखें 1.3
2. देखें 1.5
3. देखें 1.6